विश्व हिंदी दिवस पर विशेष

शरमाइए नहीं हिंदी को अपनाइए

- विष्णुकांत तिवारी
विद्यार्थी,
एमसीयू

"शरमाइए नहीं अपनाइए क्योंकि हिंदी हमारी उस अमिट पहचान का हिस्सा है जो एक भारतीय को भारतीयता का एहसास कराती है।"

भाषा एक राष्ट्र की सांस्कृतिक संवाहक होती है एवं बिना अपनी मातृभाषा के कोई भी संस्कृति मूक होते हुए मृत हो जाती है। भाषा वह छांव है जिसके तले देश के लोग पलते बढ़ते हैं एवं बचपन से ही व्यक्ति जिस भाषा से संस्कारित होते हैं वाही भाषा उनके मानसिक विस्तार की सीमा तय करती है। विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना, हिन्दी की दशा के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है। विदेशों में भारतीय दूतावास विश्व हिन्दी दिवस को विशेष आयोजन करते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी के लिए अनूठे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

10 जनवरी ही क्यों?

विश्व में हिन्दी प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन आरंभ किया गया था। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था जिसमें 30 देशों से 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। अत: 10 जनवरी का दिन ही विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी) के रूप मनाए जाने की घोषणा की थी। दुनिया के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी एक विषय के तौर पर पढ़ाई जाती है और इस लिहाज़ से हिंदी के अस्तित्व को जश्न से मनाये जाने कि दरकार पूरे विश्व में रहती है। हिंदी विश्व की भाषा बनने के सारे गुण समाहित किये हुए है अपितु इसके अपने ही इसके विस्तार में बाधा बन कर खड़े हैं। हिंदी के अनुयायियों को अनपढ़, कम-अक्ल एवं ज्ञान और बुद्धिमता के स्तरों पर कमतर आंका जाता है एवं हिंदी के प्रति हेयदृष्टि रखी जाती है यही कारण है कि इतनी समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा होते हुए भी हिंदी को आज भी अस्मिता और अस्तित्व की अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ता है।

हिंदी से जुड़े कुछ गौरवान्वित महसूस कराने वाली रोचक बातें :

1- दुनिया भर के सैंकड़ों विश्वविद्यालयों में आज हिंदी पढ़ाई जाती है और लोगों ने इस भाषा का लोहा माना है। अब विदेशों में भी हिंदी पढ़ाई और बोली जाती है।
2- हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा तादाद में बोली जाने वाली 5 भाषाओं में शामिल है।
3- फिजी में हिंदी भाषा को अधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। जिसे फिजियन हिंदी या फिजियन हिन्दुस्तानी भी कहा जाता है।
4- 2017 में पहली बार ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में 'अच्छा', 'बड़ा दिन', 'बच्चा' और 'सूर्य नमस्कार' जैसे हिंदी शब्दों को भी शामिल किया जा चुका है।

भले ही हिंदी को अब तक अपने वर्चस्व की लड़ाई अपनों से ही लड़नी पड़ी हो परन्तु आज हमारे राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्व और स्वीकृति दे रहा है तथा भारत के प्रति विश्व भर की निर्भरता में इजाफा होता पाया जा रहा है तो स्वभाविक तौर पर भारत की तमाम चीजें स्वत: महत्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान स्वरूप है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है और आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है। आज विश्व स्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है और ऐसे में हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख पा रहे हैं और यथावसर उसे विश्व भाषा की संज्ञा प्ररदान करने से हिचकिचा नहीं रहे हैं। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेटे हिंदी अब जगत भर में लगातार अपना फैलाव कर रही है। देश-विदेश में इसे जानने-समझने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है और महत्वपूर्ण बात यह है कि इंटरनेट के इस युग ने हिंदी को वैश्विक धाक जमाने में नया आसमान मुहैया कराया किया है।

विश्व में हिंदी भाषी करीब 70 करोड़ लोग हैं और इसी के साथ यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। हिंदी जानने, समझने और बोलने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब विश्व भर की वेबसाइट और इन्टरनेट जगत हिंदी को भी तवज्जो दे रही हैं। ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट, एसएमएस एवं वेब जगत में हिंदी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आइबीएम तथा ओरेकल जैसी कंपनियां अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं।

विदेश में कई पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम एफ-एम' सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। एक अध्ययन के मुताबिक हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसद तक बढ़ी है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्स एप में हिंदी में लिख सकते हैं।

बदलते परिवेश को समझते हुए यह कहना कि विश्व भर में हिंदी का लोहा जल्द ही खुलकर माना जाएगा अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस नए युग जब सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम के लगभग तब्दील हो चुका है ऐसे में हिंदी के पास अपने अंगद नुमा पैर ज़माने का पूरा अवसर है और इस राह पर चलते हुए अगर इसे भारतवासियों का यानि कि हमारा और आपका साथ मिले तो हिंदी को उसके वैश्विक भाषा बन ने के अवसर और गुण दोनों के साथ इंसाफ होगा। हिंदी गौरव है, हिंदी बोलना शान है और हिंदी वह मुखिया है जो अपने आप में जीवन का, संचार का और समाज का सार सहेजे हुए है और हम उस मुखिया के आधीन जीवन जीते हुए समाज और संचार के सभी आयामों पर बेहतर कार्य कर सकते हैं। (प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार ।विद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।